शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (641-644) April - June 2019

भारतीय शिक्षा दर्शन के विकास में परमहंस योगानंद के चिंतन की महत्ता

डॉ0 अमर जीत सिंह परिहार
प्राचार्य, संकल्प इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेशन,
गाजियाबाद (उ0प्र0)
principalsankalp@yahoo.in

प्रतिभा देवी
शोध छात्रा
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़
राजस्थान

सारांश

''परमहंस योगानंद जी एक नये मनुश्य के सर्वांगींण अभ्युत्थान का पथ प्रशस्त कर सके। वे मनोजगत के प्रिय व्याख्याता हैं और भारतीय शिक्षा दर्शन को मनोविज्ञान संगत बनाने का उनका प्रयास स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जायेगा। परमहंस योगानंद जी ने भारतीय शिक्षा दर्शन को एक ओर भारत की सनातन सांस्कृतिक जीवन धारा से संबद्ध किया है, दूसरी ओर आधुनिकतम जीवन की आवश्यकताओं प्रश्नों और चुनौतियों से जोड़ा है। रोटी की चिन्ता करते हुए भी उन्होंने शिक्षा को इतने में ही सीमित नहीं किया वरन् सत्यम्, शिवम्, सुन्दम् के विराट लक्ष्य के प्रति समर्पित किया है। इस तरह समन्वित भारतीय शिक्षा दर्शन के गठन और रूपायन में परमहंस योगानंद जी का अतुलनीय योगदान है।''

प्रस्तावना

परमहंस योगानंद जी मात्र धर्म सुधारक या दार्शनिक ही नहीं बल्कि शिक्षाविद् के रूप में भी उनका स्थान अद्वितीय है। इन्होंने शिक्षा दर्शन को समाज में व्यावहारिक स्वरूप देने के लिए देश विदेश में अनेक गुरूकुल– विद्यालय और विविध शिक्षा संस्थानों की श्रष्ंखला खड़ी की। परमहंस योगानंद जी भारतीय भाषाओं के प्रबल प्रेमी थे।

परमहंस योगानंद जी इस बात के लिए सदैव सचेष्ट रहे कि शिक्षा का प्रकाश समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचे परमहंस योगानंद जी ने अनिवार्य शिक्षा का प्रश्न सर्वप्रथम उठाया और नारी तथा दीन हीन की शिक्षा की आवश्यकता पर समाज का ध्यान केन्द्रित किया। परमहंस योगानंद जी ने न समाज के सभी वर्गो में केवल स्त्रियों के लिए अपितु बनवासी, गिरिजन, मछुआरे और किसानों के द्वार तक शिक्षा पहुँचाने की भरपूर प्रयास किया है। उन्होंने खलिहान–विद्यालय, चौपाल–विद्यालय और चरवाहा–विद्यालयों का विचार सर्वप्रथम रखा। इसमे माध्यम से जनजन तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया है।

परमहंस योगानंद जी ने शिक्षा के सम्पूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिया है जिसमें की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक उपादेयता की दृष्टि से औद्योगिक, यान्त्रिक और अर्थकारी शिक्षा पर बल दिया। योगानन्द जी केवल शरीर और बुद्धि के उत्कर्ष के लिए दी जाने वाली शिक्षा

को शिक्षा नहीं मानते थे इनके अनुसार नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करना भी शिक्षा है। उन्होंने भावनाओं के उत्पन्न करने के लिए संगीत, सामाजिक आरोग्य के लिए आर्युविज्ञान, यज्ञ सम्पादन के लिए ज्योतिष और कर्मकाण्ड तथा सामरिक सत्परता की दृष्टि से धुनर्वेद के पठन–पाठन और शिक्षण का समर्थन किया। परमहंस योगानंद जी न केवल विज्ञान की शिक्षा के पर्बल समर्थक थे बल्कि जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के भी समर्थक थे।

परमहंस योगानंद जी मानना था कि शिक्षा स्वधर्म पर आधारित होनी चाहिए। यहाँ स्वधर्म का अभिप्राय है व्यक्ति की निजी प्रकृति और स्वभाव। परमहंस योगानंद जी के शिक्षा दर्शन में व्यक्ति के स्वभाव को जानकार उसका अभिप्रेरित और प्रस्फुटन करने, उसकी स्वतंत्रता को अधिक सुरक्षित रखकर भी आत्म अनुशासन सूत्र में बंधे रखने में, उच्चतम भावनाओं के उपयोगितावादी की भेंट न चढ़ने देने में अथाह प्रयास किया गया है। इस प्रकार से उनका शिक्षा दर्शन पश्चिम के यथार्थवादी और अस्तित्ववादी विचारों से अलग स्वतंत्रपथ की ओर अग्रसर करता है। इनके अनुसार मनुष्यों को शिक्षा अपने जीवन मे पाना चाहिए। (The man should live education in their live)

परमहंस योगानंद जी वैदिक आदर्शों के प्ररेणा स्रोत थे उनके शिक्षा दर्शन का आधार भारतीय वेद तथा उपनिषद् ही रहे हैं। योगानन्द जी ने प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों प्रकार की शिक्षा उपयोगिता को स्वीकारा वैदिक आदर्श अपनी प्रकृति में भारतीयता और वैश्विकता के अप्रतिम संगम है। उनका उदेश्य देश, जाति, भाशा और लिंग से ऊपर उठकर विश्वमानव की अवधारणा है। इसलिए गुरूकुलों की शिक्षा में संकीर्ण भौगोलिक और प्राजातीय स्वार्थों से ऊपर उठकर मानव मात्र के मंगल की आकांक्षा निहित रहती है। दुनियाँ में प्रचलित शिक्षा दर्शन राष्ट्रवाद और ब्रह्माण्ड प्रेम का अनूठा आदर्श सन्तों से सीख सकता है। आज सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि भारत इन आदर्शों का अनुकरण कर अपनी शिक्षा को तदनुरूप व्यवस्थित और अनुशासित करे।

संसार में बढ़ता हुआ पर्यावरण प्रदूषण पश्चिम की दूशित मानसिकता और विकृत प्रौद्योगिकी की भेट है। ओजोन परत में छेद अन्धाधुंध औद्योगिकीकरण, अथाह सम्पदा को अनुचित साधनों से बटोरने की लालसा, हिंसा, शोषण, उत्पीड़न और प्रकृति के विपरीत रहन सहन का परिणाम है। औधोगिकरण देशों के शिक्षा दर्शन की अन्धी नकल विकासशील देशों को भी विनाश के विकराल मुख की ओर ले जा रही है। परमहंस योगानंद जी ने यज्ञ भावना का प्रबल समर्थन किया जो ह्रदय के साथ ही साथ ब्रह्माण्ड के पर्यावरण को भी पूर्णरूप से शुद्ध करती है।

पश्चिम शिक्षा का स्वरूप आर्थिक स्वावलम्बन से आगे जाकर अमानुशीकरण, यन्त्रीकरण और आर्थिक साम्राज्यवाद के रूप में परिवर्तित हो गया है। परमहंस योगानंद जी मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानते थे और उस पर औद्योगिकरण में बढ़ते दबाव को अनुचित मानते थे। वे धन के अभाव और प्रभाव दोनों को विनाशकारी मानते थे। इनके विचारों के आधार पर शिक्षा में यन्त्र के ऊपर मानव चेतना की सर्वोपरिता स्वीकार कर ही हम वर्तमान संकट से उबर सकते

हैं।

परमहंस योगानंद जी शिक्षा में नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा चाहते हैं, किन्तु वे नैतिक उपदेशों को नैतिक शिक्षा का सबसे खराब ढंग मानते हैं।

बिना धार्मिक शिक्षा के मनुष्य को मनुष्य नहीं बनाया जा सकता। नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य जितने उचित होंगे, उनका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। ये मूल्यपरक शिक्षा के पृष्ठ पोषक है किन्तु वे मूल्यपरक शिक्षा को काल्पनिक और कोरा सैद्धान्तिक रूप नहीं देना चाहते। वे मूल्यों के साथ उनकी उपादेयता, सनातन के साथ युगीन आंकाक्षा और स्वप्न के साथ सत्य का गठबन्दन चाहते हैं। काश विश्वभर के व्यक्ति योगानन्द जी के इस रहस्यमय रूप को समझ सके तो विश्व शान्ति का स्वपन साकार हो जायेगा।

परमहंस योगानंद जी शिक्षा की सृजनशीलता के प्रबल समर्थक थे। सृजनशीलता बदलती परिवेश के साथ उभरती नई चुनौतियों, प्रश्नों तथा सम्बन्धों का विचार करने में इस चिन्तन का सार्थक एवं उचित सामाजिक क्रिया के भीतर से या कला के प्रतीकवाद के माध्यम से अथवा ज्ञान के आधार पर विस्तार करने की योग्यता में चिन्हित होती है ताकि वैयक्तिक और सामाजिक समस्याओं के हल सम्भव हो सकें। आज हमारी शिक्षा पुस्तकाश्रित है। इसने सामाजिक और शारीरिक कौशल के विकास की अवहेलना कर दी है। परन्तु वास्तविक–

शिक्षा तो वह है जो मनुष्य को समत्त जीवन के लिए समग्र रूप से तैयार कर सके परमहंस योगानंद जी इस रचना धर्मिता की चिंगारी को व्यक्ति में सुलगानें, इसके अवरोधों को हटाने, इसे सुरक्षित करने और शक्ति देने का महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते हैं। तथा वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य सिखने के बाद भूलता नहीं।

परमहंस योगानंद जी ब्रह्मचर्य को शिक्षा का आधार मानते हैं। आज की जीवन पद्धति भोग पूरक है। दूरदर्शन, आकाशवाणी, चलचित्र और पत्र– पत्रिकाऐं संयम और ब्रह्मचर्य के प्रतिकूल वातावरण रचने के लिए दृढ़ संकल्पित प्रतीत हो रहे है। यौन विकृतियों को हर जगह हवा दी जा रही है। संयम उपहास की विषय वस्तु बन गया है। आधुनिकता और विज्ञान के नाम पर भी बह्मचर्य के विनाश को छात्रों की मनोविकृति, कुण्ठा, हताशा, आत्मदैत्य, आत्मघात और असफलता का कारण मानते हैं।

''योगानन्द जी मुख्य रूप से भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी प्रतिभा के लिए पहचाने जाते है। किसी भी विचार धारा के प्रचार एवं प्रसार के लिए किसी न किसी साधन की आवश्यकता होती है योगानन्द जी ने इसके लिए शिक्षा को सर्वोत्तम साधन माना था, योगानन्द जी एकेश्वरवादी व्यक्ति थे और मनुष्य को इस संसार का उच्चतम प्राणी मानते थे। योगानन्द जी ने अपने मानवता वादी विचारों तथा शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति को लाभान्वित किया, योगानन्द जी का मूल उद्देश्य सर्वोदयी समाज का निर्माण रहा है। सम्पूर्ण मानव जाति योगानन्द जी के इस उपकार के लिए सदैव ऋणी रहेगी। ''

संदर्भ ग्रंथ

1 श्री श्री परमहंस योगानन्द, *'योगी कथामृत',* योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इण्डिया, कोलकाता, 2005 ।

2 ओड़, लक्ष्मी लाल के., *'शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि',* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1990 ।

3 नायक, जे.पी.एण्ड नुरूल्लाह सैयद, *'भारतीय शिक्षा का इतिहास',* दी मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लि.दिल्ली,1976 ।

4 लाल,रमन बिहारी, *'विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक',* आर.लाल बुक डिपो,मेरठ,2012 ।

5 *योगदा सत्संग* (सेल्फ–रियलाइजेशन) त्रिमासिक पत्रिका, योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इण्डिया कोलकाता द्वारा प्रकाशित जनवरी 2003 से अप्रैल 2012 तक